Q. Discuss the contribution of Rogers and Maslows to the growth of humanistic psychology ?

or,

Discuss the characteristics and contributions of humanistic psychology ?

Ans → मनोविज्ञान के वैज्ञानिक विकास के क्रम में कई Schools विकसीत हुए। इसमें मानवतावादी मनोविज्ञान (Humanistic - Psy) एक महत्वपूर्ण School है। वर्तमान समय में मनोविज्ञान का यह एक आधुनिक School माना जाता है। इसका महत्व निरन्तर बढ़ता जा रहा है।

मानवतावादी मनोविज्ञान का अर्थ वह मनोविज्ञान है जिसमें मानव स्वभाव या मानव अस्तित्व को मनोविज्ञान की विषय वस्तु माना गया है। वर्तमान समय में एक मुख्य समस्या यह है कि मनुष्य के जीवन का अभिप्राय या उद्देश्य क्या है? मनुष्य क्यों जन्म लेता है, क्यों जीवित रहता है? तथा किस चीज की खोज करना उसका कर्तव्य होता है। इन्ही प्रश्नों के उत्तर की खोज करने वाले मनोविज्ञान को मानवतावादी मनोविज्ञान कहा जाता है। Woodworth तथा Sheehan (1975) ने इसी अर्थ में मानवतावादी मनोविज्ञान को परिभाषित करने का प्रयास किया है। उनके अनुसार "मानवतावादी मनोविज्ञान वह मनोविज्ञान है जो मानवीय मूल्यों का अध्ययन करता है तथा नैतिक पक्षों को उन्नत बनाने का प्रयास करता है।"

Reber (1987) के अनुसार "मानवतावादी मनोविज्ञान वास्तव में मनोवैज्ञानिक जगत में Third force की स्थिति रखता है।"

पहले force को मनोविश्लेषण मनोविज्ञान तथा दूसरे force को व्यवहारवादी मनोविज्ञान कहते हैं। इन दोनों force के बाद वर्तमान समय में एक तीसरा force विकसित हो चला है जिसको मनोविज्ञान का third force माना जाता है। कारण यह है कि मनोविश्लेषण के अन्तर्गत अन्तर्मुख दृष्टिकोण प्रधान माना गया जबकि व्यवहारवादी दृष्टिकोण में वाह्य पक्ष को प्रधान माना गया। मानवतावादी मनोविज्ञान में मनुष्य की उच्च प्रेरणाओं या नैतिक मूल्यों पर विशेष रूप से बल दिया गया।

मानवतावादी मनोविज्ञान के विकास में जिन मनोवैज्ञानिक ने योगदान दिया है उनमें Rogers, Maslow, Adler आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनमें Rogers के योगदान काफी महत्वपूर्ण हैं।

(1). Rogers का योगदान →

मानवतावादी मनोविज्ञान के विकास में Rogers का योगदान काफी महत्वपूर्ण है। उनका जन्म 1902 में हुआ। उन्होंने विशेष रूप से असामान्य व्यवहारों का अध्ययन किया तथा उपचार के लिए एक चिकित्सा प्रविधि विकसित किया जिसको रोगी केन्द्रीत चिकित्सा पद्धति कहते हैं। उन्होंने 1942 में इस मनोचिकित्सा ~~पद्धति~~ प्रविधि का विकसित किया। इनके पूर्व Directive therapy का बोलबाला था। लेकिन Rogers ने उसका विरोध किया। उन्होंने कहा कि रोगी पर अनावश्यक दबाव डालकर उपचार करना न तो स्वभाविक और न तो उचित है। इसलिए उन्होंने Non-directive therapy पर बल दिया। उनके इस विचार से मानवतावादी मनोविज्ञान के

विकास में बहुत सहायता मिली। उन्होंने कहा कि आदर्श मनोचिकित्सा मानवता के विरुद्ध है। मनोचिकित्सा ऐसी होनी चाहिए जिसमें मानवता को फूलने-फलने का अवसर मिल सके इसके लिए उन्होंने Non-directive therapy के उपयोग पर बल दिया। इस प्रकार मानवता मनोविज्ञान के विकास में रोगी केन्द्रीत चिकित्सा में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

Rogers ने व्यक्तित्व के सम्बन्ध में एक सिद्धान्त निकाला जिसको Self theory कहते हैं। अपने इस सिद्धान्त में उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि मनुष्य का उद्देश्य अपने Self को विकसीत करना है। व्यक्ति अपने Self को अच्छा या बुरा बना सकता है। एक बालक को यदि एक डाकू के पास रखा जाए तो वह उसी डाकू को आदर्श मानकर अपने Self को विकसीत करने का प्रयास करेगा। इसप्रकार उसकी मानवता कुण्ठित हो जाएगी, दूसरी ओर यदि बालक को किसी नैतिक या समाज सुधारक व्यक्ति के पास रखा जाए तो वह उसी को आदर्श मानकर अपने Self को विकसीत करने का प्रयास करेगा फलतः उसमें मानव सहज विकसीत हो जाएगी। Rogers के इस सिद्धान्त से मानवतावादी मनोविज्ञान के विकास में चार चाँद लग गया।

Rogers ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि बच्चे का व्यक्तित्व स्वभाविक रूप से विकसीत होना चाहिए। उन्होंने बच्चों की शिक्षा तथा समाजीकरण के लिए दण्ड को आवश्यक नहीं माना। उन्होंने कहा कि किसी बुरी आदत को छोड़ने के लिए स्वयं

Scanned with CamScanner

में सूझ या समझदारी

उसी बच्चों या व्यक्ति में सूझ या समझदारी विकसीत होना चाहिए। जब यह समझदारी विकसीत हो जाती है तब व्यक्ति स्वयं विकसीत हो जाती है तब व्यक्ति स्वयं अवांछनीय व्यवहारों को करना छोड़ देता है। रोगी को केन्द्रीत चिकित्सा इसी विचारधारा पर आधारित है। मानवतावादी मनोविज्ञान के विकास में इस विचारधारा का महत्वपूर्ण योगदान है।

Rogers ने मानवतावादी मनोविज्ञान के विकास में अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया उन्होंने आदर्श व्यक्तित्व (Ideal personality) की चर्चा की और बताया कि उससे मानवीय पक्ष के विकास में मदद मिलती है यह भी स्मरण रखना चाहिए कि मानवतावादी मनोविज्ञान कि आधारशीला वास्तव में Rogers का आदर्श व्यक्तित्व हि है।

मानवतावादी मनोविज्ञान के विकास में Rogers ने वस्तुनिष्ठ तरीके से योगदान दिया। उन्होंने कहा कि आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण स्वभाविक वातावरण में होना चाहिए। उनके इस विचार से मानवतावादी मनोविज्ञान का मार्ग बहुत अंशों में प्रशस्त हो सका।

② ✓ Maslow का योगदान →

Rogers के साथ-साथ Maslow ने भी मानवतावादी मनोविज्ञान के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने कहा कि मानव आवश्यकताओं या प्रेरकों को पांच श्रेणियों में विभाजित किया जाता है प्रथम श्रेणी में वे आवश्यकताएँ है जिनकी संतुष्टि जीवन की रक्षा के लिए किया जाता है भूख, प्यास इत्यादि उसके उदाहरण हैं। मनुष्य में सबसे पहले

यही इच्छा विकसीत होती है जब इसकी संतुष्टि हो जाती है तो दूसरी आवश्यकता जन्म लेती है जिसे सुरक्षा की आवश्यकता कहते हैं इस आवश्यकता की संतुष्टि हो जाने पर तीसरी श्रेणी की आवश्यकता विकसित होती है। इस श्रेणी में स्नेह या प्रेम की आवश्यकता प्रधान है इसकी संतुष्टि हो जाने पर चौथी श्रेणी की आवश्यकता विकसीत होती है इसे प्रतिष्ठा या सम्मान की आवश्यकता कहते हैं इस आवश्यकता की संतुष्टि हो जाने पर पांचवी तथा अन्तिम श्रेणी की आवश्यकता विकसीत होती है इसे आत्म अभिव्यक्ति अथवा (Self actualization) कहते हैं

मानवतावादी मनोविज्ञान के विकास में Maslow के self actualization की धारणा से काफी मदद मिली। इसका अर्थ यह है कि जब व्यक्ति हर तरह से संतुष्ट हो जाता है तो वह अपनी सामर्थ्य या worth को सिद्ध करने का प्रयास करता है

इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि आवश्यकताओं का विकास नीचे से ऊपर की ओर होता है। व्यक्ति को पहले रोटी की चिन्ता होती है तो वह पेट भरना चाहता है। बुनियादी आवश्यकताओं की संतुष्टि हो जाने पर व्यक्ति अपनी सुरक्षा चाहता है तब स्नेह तथा आत्मीकरण की आवश्यकता उत्पन्न होती है और व्यक्ति में प्रतिष्ठा तथा आत्म सम्मान की आवश्यकता जन्म लेती है इन सब आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाने पर आत्म कार्य बचन की आवश्यकता विकसीत होती है।

Scanned with CamScanner

इतना होने के बावजूद भी कुछ मनोवैज्ञानिक Maslow के विचारों का समर्थन करते हैं और उसे मानवीय मनोवैज्ञानिक आधार मानते हैं लेकिन इसे प्रमाणित करने के लिए प्रयोगात्मक आधार बहुत कम हैं। हम Maslow के इस सिद्धान्त का मूल्यांकन व्यक्तित्व के सम्बन्ध में पृथक करने का प्रयास करते हैं।